भारत देश में दक्षिण भाग में अवस्थित पौराणिक तीर्थों का अनुशीलन

Dr Krishna Devi

Kaithal (Haryana)

दक्षिण भारत के प्रमुख तीर्थों के अन्तर्गत कन्याकुमारी, कांची, तंजौर, तिरुपतिबालाजी आदि तीर्थ आते हैं। भाषा, वेश एवं रहन–सहन के सामान्य अंतरों के कारण उत्तर और दक्षिण ये दो खण्ड भारत के नहीं किये जा सकते। भारत देश एक है। अखण्ड है। पौराणिक काल से ही समस्त भारत के हिन्दू एक मूल आर्य जाति है। कौन–सा उत्तर भारतीय हिन्दू है। जिसके कारण अन्तःकरण में श्रीरामेश्वर, श्रीशैल, कन्याकुमारी आदि तीर्थों के दर्शनों की लालसा नहीं होती? और कौन सा ऐसा दक्षिण भारतीय हिन्दू है जो भगवती वैष्णवी, अमरनाथ, केदारनाथ आदि के दर्शनों की अभिलाषा नहीं रखता? हमारा धर्म एवं संस्कृति एक है। हमारे आराध्य एक हैं। हमारे शास्त्र एक हैं। हम भारत में रहते हों या दक्षिण भारत में, प्रातः स्मरण में श्लोक द्वारा हम पूरे भारत के महापुरुषों का सप्तपुरियों[1] और चार धामों का स्मरण करते हैं। स्नान के समय हम स्नानीय जल में गंङ्गा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी, सिन्धु, कावेरी का आवाहन करते हैं। इस प्रकार हमारा दैनिक जीवन परस्पर मिला–जुला है। हम एक हैं और एक ही रहेंगे। दक्षिण भारत में गर्मी अधिक होती है क्योंकि दक्षिणी भारत अधिकतर समुद्र से जुड़ा हुआ है। इसलिये दक्षिणी भारत की यात्रा करने से पूर्व तीर्थ यात्री को ऊनी कपड़े आदि साथ ले जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है किन्तु वर्षा होने पर समुद्र के निकट तीर्थ स्थलों में रात्रि को कुछ ठंड पड़ती है। दक्षिण भारत हमारी सभ्यता एक संस्कृति की पहचान है। दक्षिण भारत को विधर्मियों के आक्रमणों का कम शिकार होना पड़ा, इसी कारण दक्षिण भारत के तीर्थों की परम्परा परम्परा अक्षुण्य बनी हुई है। यहाँ के विशाल मन्दिर दर्शकों को चकित कर देते हैं। दक्षिण में मन्दिर को कहीं 'कोपिल' या 'कोइल' और कहीं 'गुडी' कहते हैं। मन्दिरों के उच्च गोपुर दूर से ही दिखाई देते हैं। विशालता और गोपुर ये दो दक्षिण के मन्दिरों की विशेषताएँ हैं। 'गोपुर' मुख्य मन्दिर के शिखर से अधिक ऊँचे होते हैं। मन्दिर का शिखर ऊँचाई की दृष्टि से साधारण ही रहता है किन्तु अधिकांश मुख्य मंदिरों के शिखर स्वर्णमण्डित होते हैं। गोपुर छोटे मन्दिरों में भी एक तो होता ही है अधिकांश मन्दिरों के गोपुर पाँच से ग्यारह मंजिलों के होते हैं। इन गोपुरों के निर्माण में मन्दिर निर्माण जितना खर्च होता है। भारत के अन्य प्रान्तों में गोपुर बनाने की प्रथा नहीं है इससे तीर्थयात्री को पहले गोपुर में ही मुख्य मन्दिर का भ्रम हो जाता है। मन्दिरों में प्रत्येक भक्त कर्पूर–आरती करा सकता है। सभी मन्दिरों में चन्दन तथा भस्म एवं विष्णु मंदिरों में चन्दन–प्रसाद एवं तुलसी चरणामृत यात्रियों को पुजारी देते हैं।

दक्षिण भारत का प्रत्येक हिस्सा रेल, हवाई जहाज एवं बसों आदि से जुड़ा हुआ है। अतः तीर्थयात्री दक्षिणी भारत के प्रत्येक हिस्से की यात्रा कर सकते हैं जो लोग दक्षिण के केवल मुख्य तीर्थों का दर्शन करना चाहते हैं तो उन्हें सिंहाचलम्, गोकर्ण, किष्किन्धा, हरिहर, रामेश्वरम्, कन्याकुमारी, काञ्ची, श्रीशैल, हरिहर आदि इन क्षेत्रों की यात्रा कर लेने का प्रयत्न करना चाहिए।

कन्याकुमारी शक्तिपीठ :

समस्त संसार में सर्वश्रेष्ठ विशाल भारतभूमि की अन्तिम दक्षिण सीमा पर स्थित तीन महासागरों का संगम स्थल कन्याकुमारी शहर तमिलनाडु प्रदेश में अवस्थित है। इसके एक तरफ बंगाल की खाड़ी दूसरी ओर अरबसागर तथा सम्मुख हिन्द महासागर है। तीनों समुद्रों का संगम स्थल होने के कारण यह स्थान तीर्थ बन गया है। कन्याकुमारी तीर्थ शक्तिपीठ के रूप में प्रसिद्ध है। इस तीर्थ को 'कुमारी अम्मन' तथा 'कन्याकुमारी' एवं 'कन्यातीर्थ' के नाम से अभिहित किया जाता है।[2] कन्याकुमारी अर्थात् कुँवारी कन्या, इस नाम से ही स्पष्ट होता है कि यहाँ देवी (पार्वती) कुंवारी कन्या के रूप में प्रसिद्ध हुई थी।[3]

कन्याकुमारी मंदिर का निर्माण आठवीं शताब्दी में पाण्ड्य शासकों ने बनवाया था और बाद में विजयनगर चोल और नायक राजाओं द्वारा इसका जीर्णोद्धार कराया गया। इस मंदिर से सूर्योदय तथा सूर्यास्त का दृश्य बहुत भव्य होता है। बादल न होने पर समुद्र जल से ऊपर उठते या समुद्र जल से पीछे जाते हुए सूर्य बिम्ब का दर्शन बहुत आकर्षक लगता है। इस दृश्य को देखने के लिये प्रतिदिन प्रातः–सायं समुद्र तट पर भीड़ होती है। यहाँ बंगाल की खाड़ी के समुद्र में सावित्री, गायत्री, सरस्वती तथा कन्याविनायकादि तीर्थ हैं।[4] देवी मन्दिर के दक्षिण में मातृतीर्थ, पितृतीर्थ और भीनातीर्थ हैं। पश्चिम में थोड़ी दूरी पर स्थाणु तीर्थ है। यहाँ पूर्व की ओर महर्षि वशिष्ठ का आश्रम तथा पश्चिम के ओर विश्वामित्र का आश्रम था।[5] कहा जाता है कि शुचीन्द्रम् में शिवलिङ्ग पर चढ़ा जल भूमि के भीतर से यहाँ आकर समुद्र में मिलता है। देवी कन्याकुमारी का मंदिर समुद्र तट पर अवस्थित है। स्नान घाट पर स्नान करके सर्वप्रथम गणेश के दर्शन करने के उपरांत लोग कन्याकुमारी देवी के दर्शन करने मंदिर में जाते हैं। कई द्वारों के भीतर जाने पर कुमारी देवी के दर्शन होते हैं। देवी की प्रतिमा भावोत्पादक एवं भव्य है। टालेमी ने इसे 'कोउमारिया' एवं 'पोरिप्लस' ने इसे कोमर या 'कोमारेई' कहा है।[6] देवी के एक हाथ में माला है। मन्दिर के उत्तर भाग में भद्रकाली का मन्दिर है। भद्रकाली देवी कुमारी देवी की सखी मानी जाती है।

भद्रकाली का यही मन्दिर 51 शक्तिपीठों में से एक है। इसी शक्तिपीठ में देवी सती के देह का 'पृष्ठभाग' गिरा था। यहाँ कि शक्ति 'शर्वाणी' तथा भैरव 'निमिष' है।[7] इस शक्तिपीठ को कन्याश्रम या कण्यकाचक्र कहा जाता है।[8] भद्रकाली मन्दिर में भी अनेक देव विग्रह हैं। मन्दिर से उत्तर थोड़ी दूरी पर 'पापविनाशनम्' पुष्करिणी है। यह समुद्र के तट पर एक बाबली है, जिसका जल मीठा है यात्री इसके जल से भी स्नान करते हैं। इसे 'मण्डूकतीर्थ' भी कहा जाता है।

शुचीन्द्रमतीर्थ :

कन्याकुमारी मंदिर से शुचीन्द्रम तीर्थ 8 कि०मी० की दूरी में अवस्थित है। शुचीन्द्रम तीर्थ भगवान शिव को समर्पित है। यहाँ भगवान शिव का 135 फुट ऊँचा एवं विशाल मन्दिर हैं शुचीन्द्रम मन्दिर में भगवान शिव के अतिरिक्त ब्रह्मा एवं विष्णु–इन तीनों के अलग–अलग मन्दिर हैं। भगवान शिव एवं भगवान विष्णु के मन्दिर एक समान विशाल है। इनमें कोई भी मुख्य गौण नहीं है। शिव मन्दिर में शिवलिङ्ग अवस्थित है इन्हें यहाँ स्थाणु कहते हैं।[9] स्थाणु लिङ्ग के ऊपर मुखाकृति बनी है। विष्णु मन्दिर में श्री देवी तथा भू–देवी के समीप भगवान विष्णु की मनोहर चतुर्भुज मूर्ति है।

शुचीन्द्रम मन्दिर की गणना 51 शक्तिपीठों में भी की जाती है। कला जाता है कि यहाँ देवी सती के देह के ऊर्ध्व दंत गिरे थे। शक्ति 'नारायणी' और भैरव 'संहार' या 'संकूर' है।[10] इस स्थान को 'ज्ञानवनक्षेत्रम्' भी कहते हैं। शुचीन्द्रम मन्दिर के साथ ही सुविस्तृत सरोवर है। इस सरोवर को प्रज्ञाकुण्ड कहते हैं। प्रज्ञाकुण्ड का जल अत्यन्त पवित्र माना गया है। इसके जल से जो व्यक्ति अपने पितरों का तर्पण करता है। वह उस जल की बूँद से अनन्त फल का भागी होता है[11] तथा तीनों युगों तक अपने पितरों को तृप्त कराता है। प्रज्ञाकुण्ड से थोड़ी दूरी पर श्रीहनुमान जी की बहुत विशाल प्रतिमा है। इतनी बड़ी हनुमान जी की प्रतिमा कदाचित कही नहीं है।

काञ्ची तीर्थ :

नेत्रद्वयं, महेशस्य, काशीकाञ्चीपुरीद्वयम्।
विख्यातं वैष्णयं क्षेत्रं शिवसांनिध्यकारकम्।।
काञ्चीक्षेत्रे पुरा धाता सर्वलोकपितामहः।
श्रीदेवीदर्शनाथयि तपस्तेपे सुदुष्करम्।।
प्रादुरास पुरो लक्ष्मी पद्महस्तपुरस्सरा।
पद्मासने च निष्ठन्ती विष्णुना जिष्णुना सह।।
सर्वशृंङ्गारवेषाढया सर्वाभरणभूषिता।।[12]

काशी एवं काञ्चीपुरी ये दोनों भगवान शिव के नेत्र हैं और वैष्णव क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध है तथा भगवान शिव की प्राप्ति कराने वाले हैं। कांची क्षेत्र में पितामह ब्रह्मा ने महालक्ष्मी के दर्शनार्थ हेतु तपस्या की थी तथा महालक्ष्मी भगवान नारायण के साथ कमल के आसन पर आरूढ़ होकर ब्रह्मा जी को दर्शन दिये थे।

मोक्षदायिनी सप्तपुरियों में अयोध्या, मथुरा, द्वारिका, हरिद्वार, काशी, काञ्ची और अवन्तिका की गणना है।[13] इन सात पवित्र पुरियों में काञ्ची पुरी को भी तीर्थ के रूप में अति पवित्र एवं मोक्षदायक मान्यता प्राप्त है।[14] काञ्ची दक्षिण भारत के अति प्राचीन नगरों में मुख्य है यह नगरी चोल राजाओं की राजधानी थी। काञ्ची हरि–हरात्मकपुरी है। इसके शिवकाञ्ची और विष्णु काञ्ची ये दो भाग हैं। इसके अतिरिक्त काञ्ची शक्ति क्षेत्रों में से भी एक है।[15] काञ्ची पुरी शक्तिपीठ के रूप में सुप्रसिद्ध है तथा यहाँ भगवती अन्नपूर्णा देवी का स्थान है।[16] वर्तमान में तमिलनाडु का कांजीवरम् नामक जनपद ही प्राचीन काल में काञ्ची अथवा काञ्चीपुरम् नाम से विख्यात था। यह भारत का प्रमुख तीर्थ स्थल है। काञ्चीपुरम के दो भाग हैं– शिवकाञ्ची और विष्णुकाञ्ची ये भाग अलग–अलग नहीं है नगर के दो मुहल्ले समझने चाहिए। इनमें शिवकाञ्ची नगर बड़ा है तथा विष्णुकाञ्ची का छोटा नगर है।

(क) शिवकाञ्ची :

तमिलनाडु में कांजीवरम् स्टेशन के पास ही शिवकाञ्ची नामक नगर है।[17] वहाँ भगवान शिव का एकाम्रेश्वर नामक मन्दिर है। ये शिव काञ्ची का सबसे प्रमुख मन्दिर है। मन्दिर बहुत विशाल है। मुख्य मन्दिर में तीन द्वारों के भीतर श्री एकाम्रेश्वर शिवलिङ्ग स्थित है। लिङ्गमूर्ति श्याम है। कहा जाता है यह बालुका निर्मित है। लिङ्गमूर्ति के पीछे श्रीगौरीशङ्कर की युगल मूर्ति है। यहाँ एकाम्रेश्वर पर जल नहीं चढ़ता। चमेली के सुगन्धित तैल से अभिषेक किया जाता है। प्रति सोमवार को भगवान की सवारी भी निकलती है। कामाक्षी देवी का मन्दिर बहुत विशाल है। मुख्य मन्दिर में कामाक्षी देवी की प्रतिमा है।[18] इसी मन्दिर में भगवती अन्नपूर्णा तथा शारदा देवी के भी छोटे मन्दिर हैं। इस स्थान पर आद्यराकराचार्य की मूर्ति है। कामाक्षी मन्दिर के निजद्वार पर कामकोटि–यन्त्र में आद्या लक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, वीर्यलक्ष्मी तथा विजयलक्ष्मी का न्यास किया हुआ है। कामाक्षी देवी का मन्दिर आदिशंकराचार्य द्वारा बनवाया हुआ कहा जाता है। मन्दिर की दीवार पर श्रीरूप लक्ष्मीसहित श्रीचोर महाविष्णु तथा मन्दिर के अधिदेवता श्री महाशास्ता के विग्रह हैं, जिनकी गणना एक सौ के आसपास है। शिवकाञ्ची के समस्त मन्दिर इस ढंग से बने हैं कि उन सबका मुख कामकोटि पीठ की ओर ही है और उन देव विग्रहों की शोभा–यात्रा जब–जब होती है, वे सभी इस पीठ की प्रदक्षिणा करते हुये घुमाये जाते हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र में कामकोटि पीठ की प्रधानता सिद्ध होती है।[19] शिवकाञ्ची में सर्वतीर्थ नामक विस्तृत सरोवर है।[20] ये शिवकाञ्ची में स्नान

के लिये सर्वमुख्यतीर्थ है। सरोवर के चारों ओर अनेकों मन्दिर हैं जिसमें काशी–विश्वनाथ का सबसे मुख्य मन्दिर है। तीर्थ यात्री सरोवर के तट पर मुण्डन तथा श्राद्ध आदि कार्य भी करते हैं। शिवकाञ्ची में अनेकों मन्दिर हैं। जिसमें 108 शिव मंदिर हैं।

चिदम्बरम तीर्थ :

चिदम्बरम तीर्थ दक्षिण भारत का प्रमुख तीर्थ है। यह तीर्थ स्थान भगवान शिव को समर्पित है। भगवान शिव की सुप्रसिद्ध नटराज शिवमूर्ति यहीं स्थित है। शिव के पञ्चतत्त्व लिङ्गों में से आकाश तत्त्व लिङ्ग चिदम्बरम में ही माना जाता है।[21]

चिदम्बरम को मन्दिरों की नगरी के रूप में जाना जाता है। किन्तु यहाँ भगवान शिव का नटराज मन्दिर ही प्रधान माना जाता है। यह मन्दिर बहुत बड़ा है। इसका घेरा लगभग 100 बीधे का है। इस घेरे के भीतर ही सब दर्शनीय मन्दिर आ जाते हैं। मन्दिर के गोपुरों में प्रवेश करते ही अनेक नृत्य मुद्राओं की मूर्तियां दिखाई पड़ती हैं। नटराज का निज मन्दिर पार्वती का पांचवें घेरे में है। नटराज मन्दिर काले पत्थर से बना हुआ है। इसके शिखर पर स्वर्णपत्र चढ़ा है। मन्दिर में नृत्य करते हुए भगवान शिव की बड़ी सुन्दर प्रतिमा है। यह प्रतिमा सोने की है। नटराज जी की झांकी बहुत ही भव्य है। नटराज के दाहिनी ओर काली भिति में एक यन्त्र खुदा है। वहाँ सोने की मालाएँ लटकती रहती हैं। यह नीला शून्याकार ही आकाश तत्त्व लिङ्ग माना जाता है। इस स्थान पर प्रायः आवरण सा पड़ा रहता है। जब भगवान शिव का अभिषेक किया जाता है। तब यह आवरण हटा दिया जाता है और दर्शनार्थी तब इस आकाशतत्त्व के दर्शन करते हैं।[22] तमिलनाडु राज्य में स्थित चिदम्बरम शिव मन्दिर के दर्शनों के लिये दर्शनार्थी देश के प्रत्येक हिस्से से यहाँ आते हैं। यहाँ शिवरात्रि मकर संक्राति, नवरात्रों तथा श्रावण मास भक्तों की अधिक भीड़ होती है।

अरुणाचलम् (तिरुवण्णमलै) तीर्थ :

अरुणाचल माहात्म्य :

दक्षिण दिशा में अवस्थित द्राविड़ देश में भीतर भगवान चन्द्रोशेखर का अरुणाँचल नामक महान क्षेत्र हैं जिसका विस्तार तीन योजन है। शिवभक्तों को उस क्षेत्र का अवश्य सेवन करना चाहिये। उस प्रेा को पृथ्वी का हृदय समझना चाहिए, क्योंकि भगवान शिव उस अपने हृदय में रखते हैं। लोकहितकारी महादेव जी उस क्षेत्र में स्वयं पर्वत रूप में प्रकट होकर 'अरुणाचल' नाम से विख्यात हैं। अरुणाँचल क्षेत्र समस्त सिद्धों, महार्षियों, देवताओं, विद्याधरों, यक्षों, गन्धर्वों तथा अप्सराओं का निवास स्थान है तथा वह महर्षियों के लिये सुमेरु, कैलास तथा मन्दराचल से भी अधिक माननीय है।[23]

अरुणांचल तीर्थ दक्षिण भारत के अरुणाँचल क्षेत्र में अवस्थित है। यह तीर्थ एक पर्वत के रूप में अवस्थित है। पर्वत के नीचे जुड़ा हुआ भगवान शिव का विशाल मन्दिर भी है। तमिल भाषा में इस तीर्थ को तिरुवण्णमलै कहा जाता है। दक्षिण भारत के पञ्चतत्वलिङ्गों में अग्निलिङ्ग अरुणाचलम् में ही माना जाता है। कहा जाता है कि नन्दीश्वर ने पृथ्वी पर कैलाश के जो तीन शिखर स्थापित किये थे, उनमें एक अरुणांचलम् भी है। अरुणांचलम् कैलाश के पश्चिम भाग का पर्वत है।[24] इसकी लोग परिक्रमा भी करते हैं।

अरुणाँचलम् तीर्थ में कार्तिक पूर्णिमा से कई दिन पहले से पूर्णिमा तक पर्वत के शिखर पर एक शिला पर तथा एक बड़े पात्र में बराबर ढेर–का–ढेर कपूर जलाया जाता है उस क्षण मनों कपूर जलाया जाता है। कपूर की ऊँची अग्नि शिखा पर्वत शिखर पर उठती रहती है। उस अग्नि शिखा को ही भगवान शंकर का अग्नितत्त्व लिङ्ग मानते हैं। उस समय यहाँ भक्तों की संख्या बहुत अधिक होती है। भक्तगण अरुणाचलम् की परिक्रमा करते हैं और नीचे से ही शिखर पर उठती अग्नि शिखा के दर्शन करके उसे प्रमाण करते हैं। पर्वत पर जहाँ कपूर जलाया जाता है वहाँ एक शिला पर चरण चिह्न भी बने हैं। पर्वत के साथ लगा हुआ अरुणाँचलेश्वर शिव मन्दिर बहुत विशाल है।

गोकर्ण तीर्थ :

गोकर्ण की ख्याति तीनों लोगों में है। वह समुद्र में स्थित है तथा सभी लोकों से नमस्कृत है। वहाँ ब्रह्मा आदि देवगण, तपोधन, मुनिगण, भूत, यक्ष, पिशाच, किन्नर, नाग, सिंह, चारण, गन्धर्व, मनुष्य एवं सागर, सरिताएँ, पर्वत आदि भगवान शङ्कर जी की उपासना करते हैं। वहाँ जो शङ्कर जी की पूजा–अर्चना करके तीन रात्रि का उपवास करता है। उसे दस अश्वमेघ यज्ञों का फल मिलता है।

गोकर्ण प्रसिद्ध शैवतीर्थ है।[25] गोकर्ण दक्षिण भारत के कर्नाटक में मैंगलोर के समीप एक कसबे में अवस्थित है। गोकर्ण दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध तीर्थों में से एक है। यह तीर्थ भगवान शिव को समर्पित है। यहाँ माना जाता है कि भगवान शिव का जन्म गाय के कान से हुआ था। इसी कारण से इस स्थान को गोकर्ण कहा जाता है साथ ही एक अन्य मान्यता के अनुसार कि गंगावली और अर्धनाशिनी नदियों के संगम पर बसे इस स्थल का आकार भी एक कान जैसा ही प्रतीत होता है। इसी कारण से लोगों की यहाँ काफी आस्था है। गोकर्ण एक महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थल है और यह अपने ऐतिहासिक एवं आकर्षक मन्दिरों के कारण विख्यात है। गोकर्ण का सबसे प्राचीन एवं प्रमुख मन्दिर महाबलेश्वर का है।[26] भगवान शिव को समर्पित यह मन्दिर 1500 साल पुराना है। यह कर्नाटक के सात मुक्तिस्थानों में से एक है। महाबलेश्वर मन्दिर में भगवान शिव का आत्मतत्त्व लिङ्ग है। पुराणों[27] में गोकर्ण तीर्थ की बड़ी अद्भुत महिमा बताई गई है। यहाँ के विग्रह को महाबलेश्वर महादेव कहते हैं। मन्दिर बहुत ही सुन्दर है। मन्दिर के भीतर पीठ–स्थान पर यात्री को केवल अरघ

दिखता है। अरघे के भतर आत्मतत्त्व लिङ्ग के मस्तक का अग्रभाग दृष्टि में आता है और उसी की पूजा होती है। मान्यताओं के अनुसार प्रति चालीस वर्ष पर यहाँ अष्टबन्ध महोत्सव होता है। उस समय उस महाबल (आत्मतत्त्वलिङ्ग) के सप्तपीठों और अष्टबन्धों को निकाल कर वीन अष्टबन्ध बैठाये जाते हैं। इस ष्टबन्ध महोत्सव के समय छः फीट ऊँचे इस आत्मतत्त्वलिङ्ग के स्पष्ट दर्शन होते हैं। यह लिङ्ग मृगश्रृङ्ग के समान है, किन्तु अष्टमबंधों से आच्छादित है। इस आत्मतत्त्वलिङ्ग का नाम महाबलेश्वर है। इसी से लोग गोकर्ण को महाबलेश्वर भी कहते हैं। कहा जाता है कि पाताल में तपस्या करते हुए रूद्र भगवान गोरूप धारिणी पृथिवी के कर्णरन्ध्र से यहाँ अवतरित हुए इसी से इस क्षेत्र का नाम गोकर्ण पड़ा। धार्मिक मान्यतानुसार, इस स्थल को 'दक्षिण का काशी' के रूप में भी अभिहित किया जाता है।

गोकर्ण पौराणिक तीर्थों में सुप्रसिद्ध एवं आकर्षक माना गया है। यह अपने ऐतिहासिक मन्दिरों के साथ सागरतटो के लिये भी विख्यात है। इस स्थान से हिन्दू धर्म के लोगों की गहरी आस्थाएं जुड़ी हुई हैं। इस तीर्थ स्थान के दर्शन के लिये तीर्थयात्री दो–विदेश में यहाँ आते हैं। यह तीर्थ मुक्ति का स्रोत है। कहा जाता है कि गोकर्ण में जो व्यक्ति भगवान शिव का बारह रात्रि तक उपवास करता है। वह सम्पूर्ण कष्टों से मुक्ति पाकर कृतार्थ हो जाता है।[28] गोकर्ण के विषय में वायु पुराण का कथन है जो लोग ब्राह्मण न होकर वहाँ गायत्री का पाठ करते हैं उसकी सावित्री नाश को प्राप्त होती हैं।[29]

इस प्रकार गोकर्ण अपनी धार्मिक मान्यता के अतिरिक्त खूबसूरत बीचों के आकर्षण से भी दर्शनार्थी को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहाँ के खुबसूरत बीच हजारों–लाखों पर्यटकों को लुभाते हैं। कुल मिलाकर गोकर्ण के अति सुन्दर प्राकृतिक वातावरण में धार्मिक आस्थाओं को गहराई से अनुभव किया जा सकता है।

मल्लिकार्जुन :

मल्लिकार्जुन तीर्थ आंध्र प्रदेश राज्य के कृष्णा जिले में तथा कृष्णा नदी के तट पर श्रीशैल पर्वत पर अवस्थित है। श्री शैलम पर्वत को श्रीसैलम भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त इसे दक्षिण का कैलास भी कहते हैं। श्री शैल पर्व पर मल्लिकार्जुन तीर्थ भगवान शिव के द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में से दूसरा ज्योतिर्लिङ्ग है।[30] यहाँ 51 शक्तिपीठ में से एक शक्तिपीठ भी है। महाभारत, शिवपुराण तथा पयपुराण आदि धार्मिक ग्रन्थों में इस तीर्थ के माहात्म्य के विषय में कहा गया है कि श्रीशैल पर्वत के शिखर के दर्शन मात्र से सब कष्ट दूर से ही भाग जाते हैं और अनन्त सुख की प्राप्ति होकर आगमन के चक्र से मुक्ति मिल जाती है। इसके अतिरिक्त इस पर्वत में मनुष्य अपने प्रिय प्राणों का परित्याग करके भगवान रुद्र का परम प्रिय हो जाता है।[31]

श्रीशैल पर्वत पर भगवान शिव तथा माता पार्वती की आराधना मल्लिकार्जुन के रूप में की जाती है। मन्दिर दक्षिणी मन्दिरों के ढंग का पुराना मन्दिर है। एक ऊँची पाषाण की चारदीवारी है। जिस पर हाथी–घोड़े बने हैं। इस परकोटे में चारों ओर द्वार हैं। इस प्रकार के भीतर एक प्रकार और हैं। दूसरे प्रकार के भीतर श्रीमल्लिकार्जुन का वास्तविक मन्दिर है। मन्दिर का गर्भगृह बहुत छोटा है। इसी गर्भगृह में मल्लिकार्जुन शिवलिङ्ग है।[32] यह शिवलिङ्ग लगभग 8 अंगुल ऊँची है और पाषाण के अनगढ़ अरघे में विराजमान है। मन्दिर का गर्भगृह छोटा होने के कारण एक समय में अधिक लोग भीतर नहीं जा सकते, इसी कारण यहाँ दर्शनों के लिए लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

गोदावरी तट तीर्थ (शक्तिपीठ) :

देवभूमि भारत में तीर्थ स्थानों की दृष्टि से आन्ध्रप्रदेश का नाम अग्रगण्य हैं। यहाँ भगवती दुर्गा के अतिरिक्त शिव, विष्णु, गणेश, सुब्रह्मयम् आदि देवताओं की भी पूजा अर्चना की जाती है। जहाँ एक ओर भगवान शिव मल्लिकार्जुन नामक ज्योतिर्लिङ्ग के रूप में विख्यात हैं तो वहीं दूसरी ओर देवी सती 51 शक्तिपीठों के रूप में 'गोदावरी तट' तथा श्रीशैल नामक पर्वत पर अवस्थित हैं। मल्लिकार्जुन और श्रीशैल शक्तिपीठ का वर्णन पीछे हो चुका है।

गोदावरी तट शक्तिपीठ आन्ध्रप्रदेश के गोदावरी नदी के पार कुब्बूर में कोटितीर्थ में अवस्थित है। यहाँ देवी सती के देह का बाम गण्ड[33] अर्थात् बांया गाल का पतन हुआ था। यहाँ की शक्ति 'विश्वेशी' या 'रुक्मणी' और भैरव 'दण्डपाणि' हैं।[34] इस शक्तिपीठ में ब्रह्मचर्य पालनपूर्वक एकाग्रचित होकर मनुष्य अश्वमेघ यज्ञ का फल प्राप्त करता है।[35] यहाँ अक्षयवट है जो तीनों लोको में विख्यात है। यहाँ पितरों के लिये दिया गया दानादि सब कुछ अक्षय हो जाता हैं इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति गोदावरी नदी में स्नान करके यहाँ पितरों तथा देवताओं को दान देता है। वह अक्षय लोकों को प्राप्त होता है तथा अपने कुल का उद्धार कर देता है।[36] इस स्थान पर जप, तप, दान एवं श्राद्धादि करने का अत्याधिक महत्त्व है।

आन्ध्रप्रदेश में गोदावरी तट नामक शकितपीठ सुप्रसिद्ध है। यहाँ भगवती दुर्गा की अत्यन्त भव्य मूर्ति है। भगवती दुर्गा के दर्शनों के लिए तीर्थ यात्री दूर–दूर से आते हैं। भक्तगण गोदावरी नदी में स्नान करके देवी के दर्शन करते हैं जो कि बड़े ही पुण्यप्रद माने जाते हैं। गोदावरी तट पर सभी उत्सव बड़े धूम–धाम से मनाये जाते हैं। नवरात्रों में यहाँ देवी की विशेष पूजा अर्चना के साथ–साथ जागरण कीर्तन आदि भी किया जाता है एवम भव्य मेले का भी आयोजन किया जाता है जिसमें भक्तगण हजारों की संख्या देवी के दर्शन करके अपने जीवन को सफल बनाते हैं।

मायावरम् तीर्थ :

मायावरम् तीर्थ दक्षिण भारत के चिदम्बरम् क्षेत्र से 23 मील की दूरी में कावेरी[37] के तट पर अवस्थित है। मायावरम् का प्राचीन संस्कृत नाम 'मायूरम' है। तमिल भाषा में इस स्थान को ति रुमयिलाडुतुरै' कहते हैं। मायावरम् तीर्थ स्थान शिव पार्वती को समर्पित है। यहाँ का मुख्य मन्दिर श्रीमयूरेश्वर है। जिसमें भगवान शिव मयूरेश्वर शिवलिङ्ग के रूप में

अवस्थित है। मयूरेश्वर को मयूरपर नामक महेश्वर के रूप में भी सम्बोधित किया जाता है।[38] मयूरेश्वर मन्दिर में ही पार्वती मन्दिर है। पार्वती जी का नाम यहाँ 'अभयाम्बा' है तमिल में उन्हें अंचला कहते हैं।

मायावरम् में अनेक तीर्थ एवं मन्दिर हैं। जिनमें से बृषभतीर्थ, ब्रह्मतीर्थ, अगस्त्यतीर्थ, दक्षिणामूर्ति मन्दिर, ऐय्यारप्पर, सप्तमातृका, ऐयनार् (शास्ता) आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त इस पावन क्षेत्र में महर्षि कण्व, गौतम, अगस्तय, भरद्वाज तथा देवराज इन्द्र ने भी तपस्या की थी। उनके द्वारा स्थापित पाँच शिवलिङ्ग अलग–अलग हैं। देवराज इन्द्र को इस स्थान पर वज्र की प्राप्ति हुई थी।[39] मायावरम् की गणना दक्षिण भारत के प्रसिद्ध मन्दिरों में की जाती है। कावेरी के तट पर स्थित इस मन्दिर में महाशिवरात्रि के दिन शिव–पार्वती केक दर्शनों के लिए तीर्थ यात्रियों का सैलाव उमड़ पड़ता है। कहा जाता है इस स्थान में भक्तगण भगवान मयूरेश्वर से जिस चीज की भी कामना करते हैं, मयूरेश्वर उस भक्त की कामना को पूर्ण करते हैं।

विरूपाक्ष मन्दिर :

विरूपाक्ष मन्दिर दक्षिण भारत के विजय नगर राज्य की प्राचीन राजधानी किष्किन्धा (हम्पी) में अवस्थित है।[40] किष्किन्धा को वर्तमान समय में हम्पी कहा जाता है। हम्पी स्थान पवित्र तुंगभद्रा[41] नदी के किनारे माना जाता है। हम्पी किष्किन्धा स्थान वाल्मीकि रामायण में पहले बालि का तथा उसके पश्चात् सुग्रीव का राज्य बताया गया है।[42] हम्पी का घेरा 24 मील में है। हम्पी के मध्य में विरूपाक्ष मन्दिर है। विरूपाक्ष मन्दिर भगवान शिव को समर्पित है। जिसे स्थानीय लोग हम्पीश्वर के नाम से अभिहित करते हैं।[43]

विरुपाक्ष मन्दिर दक्षिण भारत के वैभवशाली मन्दिरों में से एक है। इस मन्दिर में सभी धार्मिक उत्सव बड़े घूम–धाम से मनाये जाते हैं। महाशिवरात्रि तथा श्रावण मास में यहाँ भक्तों की बहुत अधिक भीड़ होती है। इसके अतिरिक्त चैत्र–पूर्णिमा को यहाँ भगवान विरूपाक्ष का रथ निकलता है। इनके दर्शन करने के लिए तीर्थ यात्री हजारों की संख्या में सम्मिलित होते हैं, जो भक्तगण भगवान विरूपाक्ष की सच्चे मन से पूजा–अर्चना करता है। वह रूद्रलोक में सम्मानित होता है। इसके अतिरिक्त इस तीर्थ में उपवास करने पर मनुष्य पुनः गर्भ धारण नहीं करता है। विरुपाक्ष तीर्थ मुक्ति का स्रोत है। भगवान विरुपाक्ष के दर्शन करने से मनुष्य की समस्त इच्छाओं की पूर्ति हो जाती है।[44]

माल्यवान् तीर्थ :

माल्यवान तीर्थ पर्वत के रूप में अवस्थित है। यह पवित्र पर्वत विरूपाक्ष मन्दिर से 4 मील पूर्वोत्तर तुंगभद्रा के किनारे पर स्थित है। इस पर्वत के एक भाग का नाम प्रवर्षणगिरि है। इसी पर स्फटिक शिला मन्दिर है। श्रीराम–लक्ष्मण ने वर्षा के चार मास यहाँ बिताये थे। स्फटिक मन्दिर में श्रीराम–लक्ष्मण तथा जानकी जी की बड़ी–बड़ी मूर्तियाँ हैं। यह मन्दिर एक शिला में गुफा बनाकर बनाया गया है और शिला के ऊपर शिखर बना दिया गया है। मन्दिर के दक्षिण–पश्चिम कोणपुर 'रामकचहरी' नामक एक सुन्दर मण्डप है। पास में जल का कुण्ड है। कहते हैं कि प्राचीनकाल में श्रीराम ने बाण मारकर प्रकट किया था। मन्दिर के पिछले भाग में कुछ ऊँचाई पर लक्ष्मण बाण नामक स्थान है। यहाँ लक्ष्मण ने बाण मारकर जल प्रकट किया था और श्रीराम ने वहाँ पितृश्राद्ध किया था। यहाँ पर्वत में एक चौड़ी पर दरार है जिसमें जल सदैव भरा रहता है। इसके समीप बहुत सी लिा पिण्डियाँ हैं। इस स्थान के पास ही एक छोटा सा गुफा मन्दिर है। गुफा में शिवलिङ्ग स्थापित है।

ऋष्यमूक तीर्थ :

विरूपाक्ष मन्दिर से कुछ मील की दूरी पर ऋष्यमूक पर्वत मिलता है।[45] जो तीर्थ के रूप में विख्यात है। ऋष्यमूक पर्वत को ऋष्यमूके भी कहा जाता है।[46] ऋष्यमूक पर्वत भी तुङ्गभद्रा के किनारे स्थित है। यहाँ तुङ्गभद्रा धनुषाकार बहती है तथा इस स्थान को चक्रतीर्थ भी माना जाता है। चक्रतीर्थ के समीप ही पहाड़ी पर श्रीराम मन्दिर है।

धनुष्कोटि तीर्थ :

दक्षिण समुद्र के तट पर जो परम पवित्र रामसेतु है। वहीं धनुष्कोटि नाम से विख्यात एक परम उत्तम मुक्तिदायक तीर्थ है।[47] यह तीर्थ भगवान राम को समर्पित है। धनुष्कोटि तीर्थ पर पहुँचने के लिए रामेश्वरम् मार्ग से रेल पर जाया जाता है। धनुष्कोटि स्टेशन से एक मील की दूरी पर समुद्र के मध्य में धनुष्कोटि प्रायद्वीप का सिरा बहुत छोटा है। उसके एक तरफ समुद्र को बंगाल की खाड़ी तथा दूसरी तरफ समुद्र को महोदधि कहते हैं। मानते है कि यहाँ बंगाल की खाड़ी और महोदधि नामक समुद्रों का सङ्गम है तथा इसी स्थान को धनुष्कोटि भी मानते हैं।

धनुष्कोटि अर्थात् समुद्र–संगम में तीर्थयात्री स्नान भी करते हैं। यहाँ स्नान का बड़ा ही माहात्म्य बताया गया है। विशेषता माघ मास में धनुष्कोटि में किया गया स्नान मोक्ष की प्राप्ति करवाता है तथा जो व्यक्ति सूर्यनारायण के आधे उदय के समय धनुष्कोटि में स्नान करता है। उसके वंश में ब्रह्मा, विष्णु महेश तीनों देवता हो जाते हैं। जो सूर्यग्रहण तथा चन्द्रग्रहण के समय इस तीर्थ में स्नान करता है। वह साजुज्य मोक्ष को पाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ 36 स्नान करने की विधि है। प्रायः यात्री एक ही दिन में छत्तीस स्नान कर लेते हैं। प्रत्येक स्नान के पूर्व हाथ में बालू का पिण्ड तथा कुश लेकर 'कृत्या' नामक दानवी से समुद्र–स्नान की अनुमति माँगी जाती है और उसे भोजन के लिये हाथ में लिया बालु का

पिण्ड जल में डालकर तब समुद्र में डुबकी लगायी जाती है। यहाँ स्नान के उपरान्त तीर्थयात्री पितरों को पिण्डदान भी करते हैं। यहाँ पर किया गया पिण्डदान पितरों को कल्पपर्यन्त तृप्त रखता है।[48]

सिंहाचलम् तीर्थ :

सिंहाचलम् तीर्थ आन्ध्रप्रदेश राज्य के विशाखापट्टनम में स्थित विश्व के प्राचीन मन्दिरों में से एक है। यह पौराणिक तीर्थ श्रीवाराह लक्ष्मी–नृसिंह स्वामी को समर्पित होने के कारण सिंहाचलम् के रूप में विख्यात है।

'सिंहाचल' शब्द का अर्थ है 'सिंह का पर्वत' अर्थात् यह तीर्थ एक सर्वश्रेष्ठ पर्वत के रूप में है। यह पर्वत भगवान नारायण के चौथे अवतार प्रभु नृसिंह का निवास स्थान माना जाता हैं। सिंहाचल तीर्थ को द्वापर युग का मुक्ति स्रोत माना जाता है।[49] इस पवित्र तीर्थ में भगवान नृसिंह अपने परम भक्त प्रहलाद की रक्षा के लिये अवतरित हुये थे। कहा जाता है कि प्राचीन काल में हिरण्यकशिपु ने अपने पुत्र प्रहलाद को समुद्र में गिराकर उसके ऊपर इस पर्वत को आरोपित कर दिया था, किन्तु भगवान विष्णु ने नृसिंह रूप में प्रकट होकर इस पर्वत को धारण किये रखा और भक्त प्रहलाद को बचा लिया। तब प्रहलाद ने भगवान नृसिंह के द्वारा उनके पिता के संहार के पश्चात् यहाँ भगवान नृसिंह की मूर्ति स्थापित कर इस मन्दिर का निर्माण किया। किन्तु युग परिवर्तन होने पर इस मन्दिर की देखभाल नहीं हो सकी तदनन्तर यह मन्दिर गर्त में समाहित हो गया। कालान्तर में लुनार वंश के पुरूरवा ने एक बार पुनः इस मन्दिर की खोज की और इसका पुनर्निर्माण करवाया। सिंहाचलम् मन्दिर का पुनर्निर्माण ग्यारहवीं शताब्दी में होने के कारण विश्व के प्राचीन मन्दिरों में से एक माना जाता है।

सिंहाचलम् तीर्थ स्वर्णमय पर्वत के रूप में अवस्थित है।[50] यह समुद्र सतह से 800 फुट ऊँचा है तथा आन्ध्रप्रदेश राज्य के विशाखापट्टनम से 16 कि०मी० की दूरी पर है। मन्दिर तक पहुँचने के लिये सीढ़िया बनी हैं। मार्ग के बीच–बीच में विश्राम स्थल भी बने हुये हैं। मन्दिर में श्रीनृसिंह की मूर्ति है जो वाराह भगवान जैसी दीखती है। यह मूर्ति बारहों महीने चन्दन से ढकी रहती है वैशाख मास मेमं अक्षय तृतीया के दिन इस ममूर्ति का चन्दन हटाया जाता है। उसी दिन इसके वास्तविक दर्शन हो सकते हैं। इस पवित्र दिन सिंहाचलम् पर्वत की छटा निराली ही होती है निजस्वरूप के दर्शन करने पर भक्तों की मान्यता है कि निश्चित मुक्ति प्राप्त होती है। शनिवार और रविवार के दिन इस तीर्थ स्थान में हजारों की संख्या में श्रद्धालु दर्शन कने के लिये आते हैं साथ ही यहाँ के यात्रा करने का उपयुक्त समय अप्रैल से जून तक का होता है। वार्षिक कल्याणम् (चैत्र शुद्ध एकादशी) तथा चन्दन यात्रा (अक्षय तृतीया) यहाँ के सबसे प्रमुख मनाये जाने वाले पर्व है। जिसमें तीर्थ यात्री हजारों की संख्या में भाग लेते हैं तथा इस वैष्णव क्षेत्र में[51] अर्थात् भगवान नृसिंह के आशीर्वाद के पात्र बनते हैं। सिंहाचलम् में भगवान् श्रीहरि नृसिंह रूप में स्वयं व्यक्त हुये हैं अतः उपयुक्त स्थान सम्पूर्ण कामनाओं तथा फलों को देने वाला है।[52]

रामेश्वर (सेतुबन्ध) तीर्थ :

इस तीर्थ के बारे में स्कन्दपुराण में वर्णन लिमता है कि –

अस्ति रामेश्वरं नाम रामसेतौ पवित्रितम्।
क्षेत्राणामपि सर्वेषां तीर्थानामपि चोत्तमम्।।
दृष्टमात्रे रामसेतौ मुक्तिः संसारसागरात्।
हरे हरौ च भक्तिः स्यात्तथा पुण्यसमृदिता।।
कर्मणस्त्रिविधस्यापि सिद्धिः स्यान्नात्र संशयः।।[53]

भगवान् श्रीराम द्वारा बंधाये हुए सेतु से जो परम पवित्र हो गया है, वह रामेश्वर तीर्थ सभी तीर्थों तथा क्षेत्रों में उत्तम है। उस सेतु के दर्शनमात्र से संसार–सागर से मुक्ति हो जाती है तथा भगवान विष्णु एवं शिव में भक्ति तथा पुण्य की वृद्धि होती है। उसके तीनों प्रकार के (कायिक, वाचिक, मानसिक) कर्म भी सिद्ध हो जाते हैं, इसमें कोई संशय नहीं है।

रामेश्वर हिन्दुओं का परम पवित्र तीर्थ है। यह तीर्थ चार धामों में से एक है। चार दिशाओं के चार धामों में रामेश्वर दक्षिण दिशा का धाम है। इसके अतिरिक्त यहाँ स्थापित रामेश्वरम् शिवलिङ्ग बारह द्वादश ज्योतिर्लिङ् में ग्यारहवों ज्योतिर्लिङ्ग है। यह पवित्र तीर्थ तमिलनाडु में अवस्थित है। रामेश्वरम् की गणना सम्पूर्ण भारत के प्रतिष्ठित तीर्थ स्थलों में की जाती है।[54]

भारत के उत्तर में कशी की जो मान्यता है वही दक्षिण में रामेश्वरम् की है। यह हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से चारों ओर से घिरा हुआ एक सुन्दर शंख आकार द्वीप है। बहुत समय पहले रामेश्वर द्वीप भूमि से मिला था। किन्तु प्राकृतिक घटना के कारण इस अन्तरीप का मध्यभाग दब गया और वहाँ समुद्र आ गया। यह रामेश्वरम् द्वीप लगभग 11 मील लम्बा और 7 मील चौड़ा है। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में रामेश्वर की गणना है जैसा कि रामेश्वर नाम से ही स्पष्ट होता है कि इस ज्योतिर्लिङ्ग की स्थापना भगवान श्रीराम ने की है।[55] कहा जाता है कि त्रेतायुग में श्री रामचन्द्र ने लंका जाते समय सेतु बंधवाया और सेतु के समीप रामेश्वर की स्थापना की। सेतु बांधने से पूर्व श्रीराम जी ने उप्पूर में गणेश जी की प्रतिष्ठा की। नवपाषाणम् में उन्होंने नवग्रह–पूजन एवं स्नानादि किया।

भगवान श्रीराम ने जो सेतु बंधवाया था। वह अपार वानर सेना को समुद्र पार ले जाने योग्य व्याप्त था। उसकी चौड़ाई देवीपतन से दर्भशयन तक थी। देवी पतन को सेतुमूल कहते हैं सेतु सौ योजन लंबा था। धनुष्कोटि पर लड्का से लौटने पर भगवान श्रीराम ने धनुष की नोक से सेतु को तोड़ दिया। इस प्रकार रामनाद से धनुष्कोटि तक का यह पूरा क्षेत्र

परम पवित्र माना जाता है। यह पूरा क्षेत्र भगवल्लीला स्थल है। इस स्थान का नाम गन्धमादन भी था।[56] गन्धमादन पर्वत श्रेष्ठ पर्वत है।[57] किन्तु कलियुग के प्रारम्भ में गन्धमादन पर्वत भूमि में प्रविष्ट हो गया। उसका पवित्र प्रभाव आज भी यहाँ की भूमि है। यहाँ देवता पुनः–पुनः आते थे इसी कारण इस स्थान को देवनगर भी कहते हैं। अपनी तीर्थयात्रा में श्रीबलराम भी यहाँ पधारे थे। पाण्डव महर्षि अगस्त्य आदि ऋषि मुनि भी यहाँ आये थे। इस प्रकार अनादि काल से यह देवता ऋषिगण एवं महापुरुषों की श्रद्धाभूमि रहा है।

श्रीरामेश्वर मन्दिर प्रायः 1000 फुट लंबा, छः सौ पचास फुट चौड़ा और एक सौ पचीस फुट ऊँचा है। यह मन्दिर भारतीय निर्माण कला और शिल्पकला का एक सुन्दर नमूना है। इसका प्रवेश द्वार चालीस फीट ऊँचा है। प्राकार में मन्दिर के भीतर सैंकड़ों विशाल खम्भे हैं। जिनमें बड़ी ही उत्कृष्ट कारीगरी की गई है। रामेश्वर मन्दिर के भीतर 22 तीर्थ हैं। श्रीरामेश्वरी मछिर के सामने एक सभा मण्डप है मन्दिर के उत्तर और श्रीविश्वनाथ (हनुमदीश्वर) मन्दिर है।

रामेश्वरधाम में यों तो उत्सव चलते ही रहते हैं किन्तु कुछ विशेषोत्सव जैसे महाशिवरात्रि, वैशाख पूर्णिमा, ज्येष्ठ पूर्णिमा (रामलिङ्ग, प्रतिष्ठित) नवरात्र, कृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी, मकरसंक्रांति, बैकुण्ठ एकादशी बड़ी धूम–धाम से मनाई जाती है। रामेश्वर तीर्थ के दर्शन करने के लिये भक्तजन देश–विदेश आते हैं। यहाँ तीर्थयात्रियों के खाने–पीने और ठहरने के लिये सभी प्रकार की आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। जिससे तीर्थयात्रियों को किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। रामेश्वर तक पहुँचने के लिये वायुमार्ग, रेलगाड़ी, तथा बस मार्ग के द्वारा जाया जा सकता है। रामेश्वर धाम मुक्ति का स्रोत है। इसके दर्शन मात्र से मनुष्य सभी पापों से मुक्त होकर परमपद को प्राप्त करता है।

श्रीरङ्गम तीर्थ :

श्रीरंगम तीर्थ दक्षिण भारत का प्रमुख तीर्थ है। जिसका वास्तविक तमिल नाम तिरूवरंगम है। यह दक्षिण भारत के तिरुचिरापल्ली शहर का एक क्षेत्र और एक द्वीप है। तिरुचिरापल्ली को त्रिची या तिरुची के नाम से भी विहित किया जाता है। इसका प्राचीन संस्कृत नाम त्रिशिरः पल्ली है। इसे रावण के भाई त्रिशिरा नामक राक्षस ने बसाया था। तिरुचिरापल्ली एक नगर है तथा श्रीरंगम एक तीर्थ है। इन दोनों के मध्य में पवित्र कावेरी नदी बहती है जो इन दोनों को अलग करती है। द्वीप कावेरी की दो धाराओं के मध्य में 17 मील लंबा तथा तीन मील चौड़ा है। कावेरी की उत्तरधारा को कोलरून (कोलिदम) तथा दक्षिण धारा को कावेरी कहते हैं।

श्रीरंगम तीर्थ वैष्णव क्षेत्र है। यह तीर्थ स्थान भगवान विष्णु को समर्पित है जिन्हें यहाँ श्रीरंगम (रंगनाथ) के नाम से सम्बोधित किया जाता है। श्रीरङ्गम मन्दिर से 5 मील ऊपर कावेरी की दोनों धाराएं अलग हुई हैं और लगभग 12 मील मन्दिर से आगे जाकर परस्पर मिल गई हैं। श्रीरंङ्गम मन्दिर का विस्तार 266 बीधे का है। कहा जाता है कि इतने विस्तार वाला मन्दिर भारत में दूसरा नहीं है। श्रीरंगम तीर्थ श्री रंगनाथ स्वामी मन्दिर के रूप में प्रसिद्ध है। यह हिन्दुओं का एक प्रमुख तीर्थयात्रा का केन्द्र हैं। श्री रंगनाथ स्वामी मन्दिर 7 प्राकारों के भीतर है। इन प्राकारों में छोटे–बड़े 21 गोपुर हैं। मन्दिर के गोपुर को राजगोपुर कहा जाता है और यह 236 फुट है जो एशिया में सबसे लम्बा है। इस गोपुर के ऊपर से श्रीलंका के तट को देखा जा सकता है। श्रीरंगम तीर्थ में पौषशुक्ल प्रतिप्रदा से एकादशी तक बहुत बड़ा महोत्सव होता है। उस दिन श्रीरंग जी के मन्दिर का वैकुण्ठद्वार खुलता है। भगवान की उत्सव मूर्ति उस द्वार से बाहर निकलती है। उस द्वार के पीछे तीर्थयात्री बाहर निकलते हैं। बैकुण्ठद्वार से निकलना बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। पौष शुक्ल प्रतिपदा से एकादशी के अतिरिक्त यहाँ अन्य उत्सव जैसे कृष्णाष्टमी, रामनवमी, नवरात्रे, शिवरात्रि भी बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। श्रीरंगनाथ के दर्शनों के लिये तीर्थयात्री देश के समस्त कोने के अतिरिक्त विदेश से भी यहाँ आते हैं। तीर्थयात्री यहाँ आकर आनन्द का अनुभव करते हैं। कहा जाता है कि इस श्रीरंग क्षेत्र में शयन करने वाले भगवान विष्णु का यदि विधिपूर्वक पूजन किया जाये तो वह मनुष्य समस्त पापों से मुक्त होकर बैकुण्ठ धाम को प्राप्त होता हैं क्योंकि यहाँ श्रीहरि स्वयं व्यक्त हुये हैं।[58]

तिरूपति बालाजी तीर्थ (वेङ्कटाचल) :

स्कन्दमहापुराण में श्रीवेङ्कटाचल की अवस्थिति तथा माहात्म्य का वर्णन अधोलिखित रूप में मिलता है –

श्रीनिवासपरा वेदाः श्रीनिवासपरा मखाः।
श्रीनिवासपराः सर्वे तस्मादन्यन्न विद्यते।।
सर्वयज्ञतपोदान तीर्थ स्नाने तु यत् फलम्।
तत् फलं कोटिगुणितं श्रीनिवासस्य सेवया।।
वेङ्कटाद्रिनिवासं तं चिन्तयन घटिकाद्वयम्।
कुलैकविंशतिं धृत्वा विष्णुलोके महीयते।।[59]

सभी वेद भगवान श्रीनिवास का ही प्रतिपादन करते हैं। यज्ञ भी श्रीनिवास की ही आराधना के साधन हैं। अधिक क्या, सभी लोग श्रीनिवास के ही आश्रित हैं, उनसे भिन्न कुछ नहीं है। अतः सभी यज्ञ, तप, दोनों के अनुष्ठान तथा तीर्थों में स्नान का जो फल है, उससे करोड़गुना अधिक फल श्रीनिवास की सेवा से होता है। उन वेङ्काचलनिवासी भगवान श्रीहरि का दो घड़ी चिन्तन करने वाला मनुष्य भी अपनी इक्कीस पीढ़ियों का उद्धार करके विष्णुलोक में सम्मानित होता है।

तिरुपति बालाजी (वैङ्कटेश्वर) तीर्थ एक प्रसिद्ध हिन्दू मन्दिर है।[60] यह मन्दिर भगवान विष्णु (बालाजी) को समर्पित है। यह मन्दिर भारत के सुप्रसिद्ध तीर्थस्थलो में से एक है। यह आन्ध्रप्रदेश के चित्तूर जिले में एक पर्वत पर स्थित है। श्रीवेङ्कटेश्वर भगवान का स्थान जिस पर्वत पर अवस्थित है। उसे तिरूमलै तथा वेङ्कटाचल कहते हैं। तिरू = श्रीमान, मलै

= पर्वत अर्थात् श्रीयुक्त पर्वत। इसी प्रकार वेङ्क = पाप, कट = नाशक अर्थात् पापनाशक पर्वत। पूरा वेङ्कटाचल पर्वत भगवत्स्वरूप माना गया है। माना जाता है कि वैङ्कट पर्वत का स्वामी होने के कारण बालाजी को वैङ्कटेश्वर कहा जाने लगा।[61] वैङ्कटेश्वर मन्दिर से तीन मील दूरी पर श्रीपद्मावली का मन्दिर है। जो शक्तिपीठ के रूप में विख्यात है।[62]

भगवान श्री वैङ्टेश्वर के मुख्य दिव्य दर्शन दिन में तीन बार होते हैं। प्रथम दर्शन विश्वरूप दर्शन कहलाता है। यह प्रभातकाल में होता है। द्वितीय दर्शन मध्याह्न तथा तृतीय दर्शन रात को होता है। इन सामूहिक दर्शनों के अतिरिक्त अन्य दर्शन हैं। जिनके लिये विभिन्न शुल्क निश्चित है। इन तीन मुख्य दर्शनों के लिये कोई शुल्क नहीं लगता, किन्तु इनमें दर्शनार्थी की संख्या बहुत अधिक होती है। वैसे लम्बी कतार बनाकर मन्दिर के अधिकारी दर्शन कराने की व्यवस्था करते हैं।

श्री वैङ्कटेश्वर के दर्शन करने के पूर्व यहाँ मुण्डन संस्कार प्रधान कृत्य माना जाता है, यहाँ मुण्डन संस्कार का इतना माहात्म्य है कि सौभाग्यवती स्त्रियाँ भी मुण्डन कराती हैं। यहाँ मण्डन संस्कार किया जाता है। उसे कल्याण कह सकते हैं। वेङ्कटाचल पर्वत पर पाण्डव तीर्थ, चक्रतीर्थ, देवतीर्थ, आकाशगंगा, कुमारधारिका तीर्थ, पापनाशन तीर्थ तथा स्वामीपुष्करिणीतीर्थ– ये सात तीर्थ सर्वश्रेष्ठ माने गये हैं। त्रेता में नारायणगिरि, द्वापर में सिहाँचल को, कलियुग में श्री वैङ्कटाचल को परमात्मा भगवान विष्णु का निवास स्थान कहा गया है। यह विष्णु का महान आश्रय है। भगवान विष्णु के इस परमप्रिय स्थान पर आने के पश्चात् व्यक्ति के सभी पाप धुल जाते हैं। मान्यता है कि यहाँ आने के पश्चात् मनुष्य को जन्म–मृत्यु के बंधन से मुक्ति मिल जाती है।

कुम्भकोणम् तीर्थ :

कुम्भकोणम् तीर्थ दक्षिण भारत के तंजौर जिले में अवस्थित है। यह दक्षिण भारत का प्रमुख तीर्थ है। यह तीर्थ भगवान शिव को समर्पित है। भगवान शिव के इस पवित्र तीर्थ में प्रति बारहवें वर्ष कुम्भ का मेला भी लगता है। कुम्भ मेले से ही इस तीर्थ का नाम कुम्भकोणम पड़ा। संस्कृत भाषा में कुम्भकोणम को 'कुम्भघोणम' कहा जाता है।

कुम्भकोणम तीर्थ पवित्र कावेरी नदी के तट पर स्थित हैं कुम्भकोणम् में अनेक मन्दिर है। किन्तु मुख्य मन्दिर पाँच है–(1) कुम्भेश्वर (2) शाङ्गपाणि (3) नागेश्वर (4) रामस्वामी तथा (5) चक्रपाणि। यहाँ का मुख्य तीर्थ महामघम सरोवर है। महामघम सरोवर पुण्यतीर्थ माना जाता है। स्नान के लिये यही तीर्थ सर्वप्रमुख हैं कुम्भपर्व के समय यात्री इसी सरोवर में स्नान करते हैं कुम्भपर्व के समय इस तीर्थ (सरोवर) में गङ्गा जी प्रादुर्भाव होता हैं नीचे से स्वयं जलधारा निकलती है। सरोवर में माघमास के कुम्भपर्व पर गंगा देवी के अतिरिक्त यमुना, सरस्वती, नर्मदा, गोदावरी, कावेरी, महानदी, पयोष्णी और सरयू ये नौ नदियाँ – जो नौ गङ्गा कहलाती है। स्नान करने आती हैं तथा वे अपने जल में अवगाहन करने वालों की अनन्त पापराशि, जो उनके अंदर संचित हो जाती है। यहाँ आकर प्रति बारह वर्ष पर धोती है। इसीलिये इस सरोवर का एक नाम नवगङ्गाकुण्ड भी है। इस तीर्थ में तीर्थयात्री श्राद्धादि कर्मों का अनुष्ठान भी करते हैं। यह पवित्र तीर्थ पाप–विनाशक है। यहाँ किये गये जप, हवन, श्राद्ध एवं तप को अक्षय फलदायी कहा गया है।[131]

हरिहर तीर्थ :

हरिहर तीर्थ दक्षिण दिशा में तुंगभद्रा नदी के किनारे स्थित है। हरिहर तीर्थ एक सुविस्तृत नगर के रूप में भी व्यवस्थित है। इस क्षेत्र का प्राचीन नाम गुहारण्य है। यह तीर्थ स्थान भगवान हरिहर अर्थात् शिव–विष्णु को समर्पित है। हरिहर मन्दिर बहुत प्राचीन है। मन्दिर में हरि–हरात्मक भगवत्–मूर्ति है। मूर्ति का दाहिना भाग शिवरूप है। इस ओर के मस्तक के भाग में रूद्राक्ष का मुकुट तथा ऊपर के हाथ में त्रिशूल है। बायां भाग विष्णु स्वरूप है। बाये भाग में ऊपर के हाथ में चक्र है। नीचे के दोनों ओर के हाथों में अभयमुद्रा है। मन्दिर के आसपास कई शिलालेख भी है।

हरिहर क्षेत्र में माघ–पूर्णिमा को रथोत्सव होता है। जिसमें हरिहर मूर्ति रथ में बिठाई जाती है। इस दिन यहाँ दर्शनार्थों की संख्या बहुत अधिक होती है। यहाँ तीर्थयात्री तुंगभद्रा नदी में श्राद्ध तर्पण भी करते हैं। तीर्थयात्री तुंगभद्रा में स्नान करके फिर हरिहर के दर्शन करते हैं। हरिहर के दर्शनमात्र से मनुष्य को परम कल्याण की प्राप्ति होती है।

मदुरा तीर्थ (मीनाक्षी तीर्थ) :

मदुरा दक्षिण भारत के तमिलनाडु राज्य का एक प्रसिद्ध नगर है संस्कृत ग्रन्थों में मदुरा को 'दक्षिण मथुरा' कहते हैं।[63] तमिल भाषा में इसे मदुरे या मदुरई कहा जाता है। इस सुप्रसिद्ध नगर के अन्य कई नामों से भी जाना जाता है यथा – कूडल मानगर, तुंगानगर (कभीन सोने वाली नगरी), तथा मल्लिगई मानगर (मोगरे की नगरी)। मदुरा नगर अपने प्राचीन मन्दिरों के कारण प्रसिद्ध है। किन्तु यहाँ का मीनाक्षी मन्दिर विश्व के प्रसिद्ध मन्दिरों में से एक है। मीनाक्षी मन्दिर ही मदुरा का मुख्य एवं आकर्षण तीर्थ है। मीनाक्षी मन्दिर मदुरा की पहचान है।[64]

मीनाक्षी मन्दिर देवी मीनाक्षी को समर्पित है। यह भगवती सती के शकितपीठों में भी गिना जाता है। मीनाक्षी मन्दिर अपनी निर्माण कला की भव्यता के लिये सर्वत्र प्रसिद्ध है। यह मन्दिर लगभग 22 बीधे भूमि पर बना है। इसमें चारों ओर चार मुख्य गोपुर हैं। वैसे सब छोटे–बड़े मिलाकर 27 गोपुर मन्दिर में हैं सबसे अधिक ऊँचा दक्षिण का गोपुर है जिसकी ऊँचाई 160 फीट है। इसका निर्माण 16वीं शताब्दी में किया गया था। मन्दिर परिसर का सबसे प्रमुख निर्माण 16वीं शताब्दी में किया गया था। मन्दिर परिसर का सबसे प्रमुख हजार स्तम्भों वाला कक्ष है जो सबसे बाहर की ओर स्थित है।[65]

जनार्दन तीर्थ :

जनार्दन तीर्थ त्रिवेन्द्रम् से 28 मील की दूरी पर स्थित है। यह तीर्थ भगवान जनार्दन (विष्णु) को समर्पित है। भगवान जनार्दन के मन्दिर का घेरा बड़ा है। घेरे के मध्य में मन्दिर में भगवान जनार्दन की चतुर्भुज श्यामवर्ण सुन्दर मूर्ति है।

जनार्दन मन्दिर की परिक्रमा में शास्ता, शङ्कर जी तथा वटवृक्ष के दर्शन होते हैं। मन्दिर से थोड़ी दूरी पर एक सरोवर है। यात्री इसमें स्नान करते हैं इस सरोवर में स्नान करके फिर जनार्दन के दर्शन करने से मनुष्य का चित्त सब पापों से शुद्ध हो जाता है और वह शिवलोक को प्राप्त होता है।[66] जनार्दन में धूप की खादान है। यहाँ धूप निकलती है। यहाँ से लोग धूप ले जाते हैं। कहते हैं यहाँ की धूप जलाने से बच्चों के नजर, दोष से उत्पन्न रोग दूर हो जाते हैं। जनार्दन तीर्थ के विषय में पद्मपुराण में विवरण मिलता है कि ब्रह्माजी यहाँ यज्ञ कर रहे थे उस यज्ञ में स्वयं जनार्दन एक साधु के भोजन अञ्जलि में लेकर खाना प्रारम्भ किया। भोजन समाप्त हो गया किन्तु वृद्ध साधु तृप्त नहीं हुआ। तब ब्रह्मा जी जान गये कि साधु के रूप में जनार्दन भगवान यहाँ अवतरित हुये हैं। तब भगवान अपने चतुर्भुज रूप में प्रकट हुये। ब्रह्माजी ने प्रार्थना की! आप मेरे इस यज्ञ स्थल पर इसी रूप में स्थित रहें। तब भगवान ने ब्रह्मा जी की प्रार्थना स्वीकार की तथा वे श्री विग्रहरूप में यहाँ स्थित हुए।

भगवान जनार्दन सम्पूर्ण देवताओं के ईश्वर हैं। वे समस्त लोकों की रक्षा करने के लिये यहाँ वृद्ध साधु के रूप में अवतीर्ण हुये हैं।[67] इनके दर्शनों से भक्तों की सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति के साथ–साथ आत्मिक शांति का अनुभव होता है।

कालहस्तीश्वर तीर्थ :

कालहस्तीश्वर तीर्थ भगवान शिव को समर्पित है। यह पवित्र तीर्थ तिरुपति बालाजी से कुछ ही दूर उत्तर में आर्कट जिले में स्वर्णमुखी नदी के तट पर अवस्थित है। कालहस्तीश्वर स्थान में भगवान शिव का वायुलिङ्ग हैं। इसके अतिरिक्त यह तीर्थ शक्तिपीठ के रूप में भी सुप्रसिद्ध है। यहाँ देवी सती का दक्षिण स्कन्ध गिरा था। कालहस्तीश्वर बहुत बड़ी मन्दिर है इसके तीन विशाल गोपुरम हैं। मन्दिर का भीतरी भाग 5वीं शताब्दी का और बाहरी भाग 12वीं शताब्दी में निर्मित है।

कालहस्तीश्वर को दक्षिण के लोग 'दक्षिण काशी' कहते हैं। यहाँ एक मन्दिर मणिकुण्डेश्वर नाम का है। लोक मरणासन्न व्यक्तियों को इस मन्दिर के अंदर सुला देते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि वाराणसी की भांति यहाँ भी शिवजी मरने वालों के कान में तारक–मन्त्र सुनाकर मुक्त कर देते हैं। कालहस्तीश्वर में यातायात, रहन–सहन, खान–पानादि की सभी सुविधाएँ उपलब्ध है। इस तीर्थ के दर्शनों के लिये तीर्थयात्री दूर–दूर से यहाँ आते हैं। महाशिवरात्रि के दिन इस स्थान पर बहुत बड़ा मेला भी लगता है इस मेले में सम्मिलित होकर भक्तगण भगवान शिव के आशीर्वाद को प्राप्त करते हैं।

जम्बुकेश्वर तीर्थ :

जम्बुकेश्वर[68] तीर्थ दक्षिण भारत के पञ्चतत्त्वलिङ्गों में से एक है। यह जलतत्त्वलिङ्ग माना है। यह तीर्थ राज्य के त्रिचिनापल्ली जिले में रीरङ्गनाथ से एक मील की दूरी पर अवस्थित है। जम्बुकेश्वर मंदिर बहुत विशाल है। स्थापत्य की दृष्टि से यह मन्दिर बहुत उत्तम बना है। मन्दिर के पांचवें घेरे में जम्बुकेश्वर लिङ्ग एक जल–प्रवाह के ऊपर स्थापित है। लिङ्गमूर्ति के नीचे से बराबर जल ऊपर आता रहता है।

निज मन्दिर के पीछे एक जामुन का पेड़ हैं। इसी पेड़ के कारण मन्दिर तथा शिवलिङ्ग का नाम जम्बुकेश्वर पड़ा।[69] कहा जाता है कि प्राचीन काल में यहाँ एक ऋषि भगवान शिव की आराधना करते थे। जम्बूवन में निवास करने के कारण उनका नाम जम्बु ऋषि पड़ गया था। उनकी अराधना से खुश होकर भगवान शिव ने उन्हें दर्शन दिया और उनकी प्रार्थना पर यहाँ लिङ्ग–विग्रह के रूप में नित्य स्थित हुये। जम्बुकेश्वर तीर्थ मुक्ति का स्रोत है। जम्बुकेश्वर जलतत्त्वलिङ्ग के दर्शन करने से मनुष्य दुःख के सागररूप संसार में पुनः जन्म नहीं लेता है।[70] कहा जाता है जो इस स्थान पर अपने प्राण त्यागता है। वह परमगति को प्राप्त करता है।[71]

संदर्भ सूची :

1. (क) अयोध्या मथुरा काशी काञ्चीह्यवन्तिका।
   एताः पुण्यतमाः प्रोक्ताः पुरीणामुत्तमोत्तमाः।। ब्रह्माण्ड पु.4/40/91
2. क) स्नातमात्रो नरस्तत्र चन्द्रलोके महीयते।
   दक्षिणेन तु तीरेण कन्यातीर्थ तु विश्रुतम्।। म० पु० 193/76 1
3. ब्रह्माण्ड पुराण 2/16/11, 3/13/28
4. पद्म पु० 6/1/3/28
5. आश्रमो वैवसिष्ठस्यस्थाणुतीर्थबभूवह।
   तस्यपश्चिमदिग्भागेविश्वामित्रस्यधीमतः।। वाम॰पु॰ 40/3
6. धर्मशास्त्र का इतिहास, पृष्ठ 1422
7. कन्याश्रमे च मे पृष्ठं निमिषो भैरवस्तथा।
   शर्वाणी देवता तत्र कुरुक्षेत्रे च गुल्फतः। तन॰पीठ॰ श्लो॰ 31
8. (क) वन० 83/189
9. एतानिपुण्यतीर्थानिमध्येस्थाणुरितिस्मृतः।
   तस्यदर्शनमात्रेण प्राप्नोति परमपद्म।। वाम॰ पु॰ 46/3
10. संहाराख्य ऊर्ध्वदन्तो देवी नारायणी शुचौ। तन्त्र॰ पीठ॰ (महापीठनिरूपण)39
11. पितृणांतर्पणं यस्तु जलेत स्मिन्करिष्यति।

बिदौबिंदौ तुतोपस्यह्यनतफलभाग्भवेत्।। वाम० पु० 45/26

12. ब्रह्माण्ड पु० 35/17–20
13. काशी काञ्ची च मायाख्या त्वयोध्या द्वारवत्यपि।
मथुरावन्तिका चैताः सप्तपुर्योऽत्र मोक्षदा।। स्कन्द० काशीखण्ड 6/68
14. अयोध्या मथुरा माया काञ्ची ह्यवन्तिका।
एताः पुण्यतमाः प्रोक्ताः पुरीणमुत्तमोतमाः।। ब्रह्माण्ड पु० 4/40/91
15. वार्हस्पत्य सूत्र 3/124
16. देवीभागवत पु० 7/38/8
17. पुष्पेषु जाती नागरेषु काञ्ची नारीषु रम्भाश्रमिणां गृहस्थः।
कुशरथली श्रेष्ठतमा पुरेषु देशुषु सर्वेषु च मध्यदेशः।। वाम० पु० 12/50
18. ब्रह्माण्ड पु० 4/44/94
19. ब्रह्माण्ड पु० 4/5/6–10, 4/40/16
20. कामकोष्ठी पुरी काञ्चीम। भाग० पु० 10/79/14
21. पद्म पु० 6/204/30
22. तस्मिंस्तीर्थेनरः स्नात्वादृष्ट्वाकोटीश्वरंहरम्।
पंचयज्ञानवाप्नोतिनित्यंश्रद्वासमन्वितः।। वाम० पु० 34/29
23. देवी भाग० पु० 7/38/11
24. धर्मशास्त्र का इतिहास, पृष्ठ 1435
25. वही, पृ. 240
26. पद्म पु० 39/22–25
27. कूर्म० पु० 2/35/29
28. आषाढ़मासेयाकृष्णाभविष्यति चतुर्दशी।
तत्रैवसिद्धिदंलिंगमेघनादेनस्थापितम्।। वाम० पु० 46/14
29. तस्मिन्नेव तु गायत्र्याः स्थानं त्रैलोक्यविश्रुतम्।
त्रिरात्रमुषितस्तत्र गोसहस्रफलं लभेत्।। पद्म पु. 39/27
30. (क) उपोष्य द्वादशरात्रं कृतार्थो जायते नरः। महा० वन० तीर्थ० 85/29
(ख) म० पु० 22/38
31. वायु० पु० 77/19
32. मल्लिकार्जुनसज्ञइचावतारः शंकरस्य वै।
द्वितीय श्रीगिरौ तात भक्ताभीष्टफलप्रदः।।
संस्तुतो लिङ्गरूपेण सुतदर्शनहेतुतः।
गतस्तत्र महाप्रीत्या स शिवः स्वगिनेर्मुने।।
ज्योतिर्लिङ्ग द्वितीय मद्दर्सनात् पूजनान्मुने।
महासुखकरं चान्ते मुक्तिदं नात्र संशय।। शि०पु० शतरू० स० 41/12
33. तल्लिङ्गं यः समीक्षेत स सर्वैः किल्बिषैरपि।
मुच्यते नात्र संदेहः सर्वान्कामानवाप्नुयात्।। शिव पु० कोटि० पञ्चदशोध्याय 20
34. दुखं च दूरतो यात्ति सुखमात्यन्तिकं लभेत्।
जननीगर्भसम्भूतं कष्टं नाप्नोति वै पुनः।। शिव पु० कोटि० 21
35. कूर्म पु० 2/20/35
36. तन्त्रचूड़ामणि पीठनिर्णय, श्लोक 45
गोदावरी तीन पड़े वाम गण्डरवानि।
विश्वेश भैरव विश्वमातृका भवानी। शक्तिसंगम पत्रिका, जुलाई 1991, पृ.47
37. ब्रह्म० पु० 78/77
38. ततो पीठं समासाद्य ब्रह्मचारी समाहितः।
अश्वमेघमवाप्नोति गमनादेव भारत।
यत्राक्षय्यवटो नाम त्रिषु लोकेषु विश्रुतः।
पितृणा तत्र वै यन्तमक्षयं भवति प्रभो।।
महानद्यामुपस्पृश्य तर्पयेत पितृदेवताः।
अक्ष्यानात्नुयालोकान् कुलं चैव समुद्धरेत।। पद्म० पु० आदि० 38/2–4
39. वैदर्भा वाथ वैरा च पयोष्णी प्राङ्मुखापरा।
कावेरी चोत्तरा पुण्या तथा जालन्धरो गिरिः।। म० पु० 22/64

40. स्कन्ध॰ पु॰ माहे॰, पृष्ठ 243
41. स्कन्ध॰ पृ॰ माहे॰, पृष्ठ 243
42. वनपर्व 280/16
43. दर्शनायपि चैतानि सद्यः पापहराणि वै।।
तुङ्गभद्रा नदी पुण्या तथा भीमरथी सरित।। म॰ पु॰ 22/45
44. ब्रह्माण्ड पु॰ 2/14/48, 15/15
45. रामा॰ 3/49/31, 4/27/1–4
46. वनपर्व 280/26, 282/1
47. वनपर्व 280/9, 147/30
48. विष्णु पु॰ 2/2/18
49. धनुष्कोटिर्धनुष्कोटिर्धनुष्कोटिरितीरणात्।
स्वर्गापर्वगदं पुंसां महापुण्यफलप्रदम्।।
स्क॰ ब्राह्मखण्ड, सेतु माहा॰ 33/68
50. इम्पी॰ गजे॰ इण्डि॰, जिल्द 12, पृष्ठ 375
51. स्कन्द॰ पु॰ वैष्णव खण्ड, वेकट॰ मा॰, पृष्ठ 263
52. वही, पृ. 262
53. बार्ह॰ सू॰ 3/120
54. पद्म पु॰ उत्तर॰, पृष्ठ 995
55. स्कन्द पु॰ ब्राह्म॰ सेतु मा॰ 1/17–19
56. इम्पी॰ गजे॰ इण्डि॰ जिल्द 21, पृष्ठ 173–175
57. भद्रतीर्थ च विख्यातं पम्पातीर्थ च शाश्वतम्।
पुण्यं रामेश्वरं तद्वदेलापुरमलं पुरम्।। म॰पु॰ 22/50
58. स्कन्ध पु॰, ब्राह्म ख॰, सेत मा॰ अ॰ 45
59. दिव्यगङ्गा जलेनैव स्थापयिष्यति यः शिवम्। शिव पु॰ कोटि॰ 31/43
60. आदि पु॰ 88/13, 216/3
61. कूर्म पु॰ 2/30/13
62. वैदर्भा वाथ वैरा च पयोष्णी प्राङ्मुखा परा।
कावेरी चोत्तरा पुण्या तथा जालन्धरो गिरिः।। म. पु. 22/64
63. भाग॰ 5/19/16, 16/79/13
64. गरूड़, ब्रह्म खण्ड, अ॰ 16 (वेंकटगिरि माहात्म्य)
65. शक्तितङ्ग, पृष्ठ 169
66. (क) म॰ पु॰ 191/25
(ख) कूर्म॰ पु॰ 2/42/16
67. नृसिंह पु॰ 65/35–36
68. स्कन्द पु॰, माहेश्वर, पृ. 243
69. वायु पु॰ 77/47
70. भाग॰ पु॰ 10/79/14
71. कुम्भस्य घोणतो यस्मिन् सुधापूरं विनिस्सृतम्।
तस्मान्तु तत्पदं लोके कुम्भघोणं वदन्ति हि।। तीर्थङ्क, पृष्ठ 364